इन्टरव्यू-१२

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम मो.असलम है।

प्र: आपका अपना करघा है ?
ज: जी नहीं, दूसरे का गृहस्था का है।

प्र: किराये पर बीन रहे हैं ?
ज: नहीं हम लोग मजदूर हैं।

प्र: कितनी मजदूरी मिलती है आप लोगों को ?
ज: चार सौ रुपया।

प्र: एक साड़ी की ?
ज: हां।

प्र: कितनी साड़ी एक महीने में बिन लेते हैं महीने में ?
ज: यही 4-5 ठो।

प्र: सब बीन कर महीने में कितनी आमदनी होती होगी ?
ज: महीने की आमदनी वही दो हजार रुपये।

प्र: निश्चित दो हजार रहता है कि कम ज्यादे होता है ?
ज: नहीं निश्चित रहता है।

प्र: घर में कौन-कौन है आपके ?
ज: हमारे तीन लड़के है और औरत।

प्र: वो लोग भी इसी में है ?
ज: नहीं अभी तो छोटे हैं काफी।

प्र: दो हजार में आपका खर्च चल जाता है ?
ज: नहीं, उसी में खीचतान लगा रहता है। लड़ाई झगड़ा भी घर में लगा रहती है सौ का नोट भजाइयें वही वक्त ओश आ जाता है।

प्र: खर्च चलाने के लिए कुछ और भी करते हैं ?
ज: नहीं, इसी से किसी तरह खींचते हैं, नरम-गरम चल जाता है।

प्र: एक जगह निश्चित नहीं होता ना कि हमेशा यहां काम मिल ही जायेगा ?
ज: नहीं, कोई जरूरी नहीं आज पट रहा कट रहे कल नहीं पटेगा नहीं करेंगे।

प्र: टाईम से मजदूरी मिलती है ?
ज: हां।

प्र: साड़ी में अगर कोई डिफेक्ट आ जाये तो मजूरी कटती है ?
ज: हां। पचास रुपया सौ रुपया कट सकता है उसे बनवाना पड़ता है।

प्र: साड़ी का कम या ज्यादे बिकने का असर गृहस्था पर तो पड़ता है क्या मजूरी पर भी पड़ता है ?
ज: नहीं।

प्र: क्यों नहीं पड़ता ?
ज: गृहस्था पहले से ही वो इतना बना कर रखते है कि कभी माल नहीं बिका समय से ता वों मजूरी दे देते क्योंकि उनके पास उतना रहता है महीना भर तो कम से कम दे ही सकते हैं, तभी ना वो गृहस्था हैं। खाली नंगे भूखे गृहस्था तो हाते नही है।

प्र: नहीं जैसे मार्किट में साड़ी नहीं बिक रही तो वो आपने बनवाना भी बंद कर देते होंगे ?
ज: नहीं साड़ी बनती रहती है।

प्र: आप केवल बुनने का काम करते हैं कि डिजाइन भी करते है ?
ज: नही डिजाइन तो दूसरे लोग करते हैं।

प्र: आप बनारसी बिन रहे हैं या हैण्डलूम की ?
ज: बनारसी।

प्र: आपकी बीबी भी कुछ करती हैं ?
ज: नहीं लड़कों से परेशान रहती है।

प्र: अपना करघा लगाने का सोच रहे हैं ?
ज: हां, हर आदमी सोचता है लेकिन उसमें पैसा लगता है ना। एक करघा मे पन्द्रह-बीस रुपया लगता है।

प्र: आपको उम्मीद लगती है कि आप करघा होगा ?
ज: हां सभी उम्मीद लगाते हैं।

प्र: करघे के लिए बैंक से या कहीं से लोन नहीं मिलता है ?
ज: नहीं।

प्र: पता किए है आप ?

ज: मिलता ही नहीं तो पता क्या करें।

प्र: नहीं सुना हैं कि मिलता है ?
ज: नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।

प्र: समिति बनाकर कुछ लोन मिल सकता है, ऐसा कुछ नियम है न ?
ज: रूकावट
नहीं जो लोन मिलता था उसमें बुनकर का नाम तो था लेकिन उसमें समिति के नेता लोग को ही फायदा होता था।

प्र: तो कोई समिति नहीं है ?
ज: नहीं।

प्र: कभी बनाने का सोचा भी नहीं ?
ज: रूकावट
उस दिन भी बताये न मैडम काई फायदा नहीं है ना सरकार से हमको कोई उम्मीद नहीं है जो करना है अपने बल पर करना है ये सरकार से हमें कुछ लेना देना नहीं है।
शुरू

प्र: जब आपका अपना करघा होगा तो उसपर फायदा होगा बीनने में या मजूरी में ?
ज: अपने करघे में अपना फायदा है।

प्र: मान लिजिए साड़ी बिनती नहीं तो ?
ज: फिर भी उसी में फायदा है।

प्र: कैसे ?
ज: क्योंकि अपना हैं। नरम-गरम भी बिकेगा तो हमारी मजदूरी तो आ जायेगी। मुनाफा नही भी मिला जो मजूरी तो मिल ही जायेगी।

प्र: बुनकारी करने के अलावा कुछ करने की सोचते हैं ?
ज: नहीं यही करना है और कोई काम करने के लिए सीखना पड़ेगा।

प्र: कैसे बहुत से लोग जैसे दुकानदारी इत्यादि करने लगे हैं वैसा कुछ ?
ज: बहुत से लोग बिमारी की वजह से गए हैं जैसे इसमें पेट लगातार दबा रहता है। तो कोई पेट की शिकायत होने पर ही छोड़ते हैं। वैसे कोई नहीं चाहता की काम छोड़े। और दुकानदारी करें।